[1]वसतिः, [2]वासिः, [3]वसिः, [4]वस्तिः, [5]वसु, [6]वस्तु, [7]वास्तु, [8]आवसथः, [9]वत्सरः, [10]वासरः, [11]वसिष्ठः, [12]वस्नम्, [13]वसन्तः, [14]वस्त्रम्.

(1577) "**वस आच्छादने**" (II-अदादिः-1023. अक. सेट्. आत्म.)

'वस्यति स्तम्भने **वस्ते छादने** वसयेत् वसेत् ॥' (श्लो. 187) इति **देवः**।

'**—स्मृतौ**' इति **वोपदेवः**।

वासकः-सिका, वासकः-सिका, विवसिषकः-षिका, वावसकः-सिका ;

वसिता-त्री, वासयिता-त्री, विवसिषिता-त्री, वावसिता-त्री ;

—वासयन्-न्ती, वासयन् वासयमानो वा वस्त्रं देवदत्तेन, वासयिष्यन्-न्ती-ती,

---

1. '**वहिवस्यर्ति**भ्यश्चित्' (द. उ. 1-29) इत्यतिप्रत्ययः। **वसतिः**=आलयः।
2. '**वसि**वपि—' (द. उ. 1-53) इति इञ्प्रत्ययः। **वासिः**=तक्षकारभाण्डम्।
3. औणादिकः (द. उ. 1-68) इप्रत्ययः। **वसिः** शय्या, रात्रिर्वा।
4. '**वसे**स्तिः' (द. उ. 1-74) इति तिप्रत्ययः। वसत्यस्मिन् नानौषधियुक्तः स्नेह इति **वस्तिः**-अधःकायप्रदेशः, चर्ममयः पुटश्च। **बस्तिः** इति **गौडीयाः**।
5. औणादिके (द. उ. 1-95) उप्रत्यये रूपमेवम्। **वसु**=धनम्।
6. '**वसे**स्तुन्' (द. उ. 1-128) इति तुन्प्रत्ययः। **वस्तु**=द्रव्यम्।
7. 'अगारे णिच्च' (द. उ. 1-129) इति तुन्प्रत्ययः, तस्य णिद्वद्भावेनोपधावृद्धिः। **वास्तु**=गृहादिकम्।
8. 'आङि **वसः**' (द. उ. 6-39) इति आङ्युपपदे धातोरथप्रत्यये रूपमेवम्। **आवसथः**=गृहादिकम्।
9. '**वसे**श्च' (द. उ. 8-51) इति सरन्प्रत्यये 'सः स्यार्द्धधातुके' (7-4-49) इति तकारादेशे च रूपम्। वसन्त्यस्मिन् ग्रहनक्षत्रर्तुदेवता इति **वत्सरः**=अब्दः। '**संवत्सरो वत्सरोऽब्दः** हायनोऽस्त्री शरत्समाः' **इत्यमरः**।
10. णिजन्तात् औणादिके (द. उ. 8-100) अरप्रत्यये रूपमेवम्। 'घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवस**वासरौ**' इत्यमरः।
11. अतिशयेन वसुमान् **वसिष्ठः**। वसुमच्छब्दात् इष्ठन्प्रत्यये मतुब्लुकि टिलोपे च रूपमेवम्।
12. 'धापृ**वस्य**ज्यतिभ्यो नः' (द. उ. 5-39) इति नः। "**वस्नम्** मूल्यम्" इति **धातुवृत्तिः**।
13. 'तृभूवहि**वसि**—' (द. उ. 6-19) इति झच्प्रत्ययः। 'झोऽन्तः' (7-1-3) इति अन्तादेशे **वसन्तः** इति रूपम्। ऋतुविशेषः।
14. औणादिके (द. उ. 8-79) ष्ट्रन्प्रत्यये रूपमेवम्। **केचित्तु** '**वस** आच्छादने' इत्यस्मात् व्युत्पादयन्ति, तदेव न्याय्यम्।